दॆवरनाम: अपमृत्यु परिहरिसो अनिलदॆव
रचने: श्री जगन्नाथ दासरु
राग: कांबॊदि
ताळ: झंपे

अपमृत्युपरिहरिसो अनिलदॆव
कृपणवत्सलने कावर काणे जगदोळगे॥प॥

निनगिन्नुसमराद अनिमित्त बांधवरु
एनगिल्लआवाव जनुमदल्लि
अनुदिनवुएम्म नीनुदासीन माडुवुदु
अनुचितवुजगदि सज्जन शिखमणिये॥१॥

करुणाभिमानिगळुकिंकररु मूलॊक
धोरेनिन्नोळगिप्प सर्वकाल
परिसरनेई भाग्य धोरेतनके सरियुंटे
गुरुवरनेनी दयकरनेंदु बिन्नैपे
(गुरुवरनेनी कृपकरनेंदु प्रार्थिसिदे)॥२॥

भवरॊगमॊचकने पवमानराय नि–
न्नवरवनुनानु माधव प्रियने
जवनबाधेय बिडिसु अवनियोळु सुजनरिगे
दिविजगणमध्यदोळु प्रवर नीनहुदो॥३॥

ज्ञानायु रूपकनु नीनहुदो वाणि पं–
चाननाद्यमररिगेप्राणदॆव
दीनवत्सलनेंदुना निन्न मोरेहोक्के
दानवारण्यकृतानु सर्वदा एम्म॥४॥

साधनशरीरविदु नी दयदि कोट्टद्दु
साधरणवल्लसाधु प्रियने

वेदवादोतितजगन्नाथविठलन
पादभजनेयनित्तु मोद कोडु सतत॥५॥